लक्ष्मी नारायण दुबे महाविद्यालय,

मोतिहारी, पूर्वी चम्पारण

कवि – गोरखनाथ

डॉ. सन्तोष विश्नोई, सहायक प्रोफेसर,

हिन्दी विभाग

कवि-योगी गोरखनाथ का कवि-परिचय दीजिए।

=> गोरखनाथ आदिकालीन हिन्दी काव्य साहित्य के अंतर्गत आते हैं। गोरखनाथ - नाथ साहित्य के आरंभकर्ता माने जाते हैं। वे सिद्ध मत्येन्द्रनाथ के शिष्य थे, किन्तु उन्होंने सिद्धों के मार्ग का विरोध किया था। गोरखपंथी साहित्य के अनुसार आदिनाथ स्वयं शिव थे। उनके पश्चात मत्येन्द्रनाथ हुए, जिनके आचरण का विरोध उनके शिष्य गोरखनाथ ने किया। राहुल सांकृत्यायन ने गोरखनाथ का समय 845 ई० माना है, डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी उन्हें नवीं शती का मानते हैं, आचार्य रामचंद्र शुक्ल उन्हें तेरहवीं शती का बतलाते हैं, डॉ पीतांबरदत्त बड़थ्वाल इन्हें ग्यारहवीं शती का मानते हैं तथा डॉ रामकुमार बर्मा शुक्ल जी के मत से सहमत है।

ऐसी मान्यता है कि गोरखनाथ ने सभी बिखरे हुए नाथपंथियों का संगठन किया तथा उन्हें 12 शाखाओं में बाँटा। गोरखनाथ पहले सिद्ध थे। बाद में नाथपंथी हो गए। इन्होंने जिस योगमार्ग को चलाया वह 'हठयोग' था।

हठयोग मे सांसारिक आकर्षणों को हठपूर्वक रोका जाता है। इसके लिए शरीर में स्थित शक्तिरूपी कुंडलिनी को जगाकर शिव के निवास सहस्त्रार चक्र में ले जाया जाता है। इसप्रकार शिव से शक्ति का योग ही

'हठयोग' है। 'हठ' शब्द में 'ह' का अर्थ सूर्य और 'ठ' का अर्थ चन्द्रमा भी व्याख्यायित किया गया है। इसप्रकार हठयोग का अर्थ सूर्य और चंद्रमा का संयोग भी लक्षित है।

हठयोग की साधना शरीर पर आधारित है। कुंडलिनी को जमाने के लिए आसन, मुद्रा, प्रणायम और समाधि का सहारा लिया जाता है। गोरखनाथ ने लिखा है कि धीर वह है, जिसका चित्त विकार - साधन होने पर भी विकृत नहीं होता :-

नौ लाख पातरि आगे नाचैं, पीछे सहज अखाड़ा।
ऐसे मन लै जोगी खेलै, तब अंतरि बसै भंडारा॥

मूर्त जगत में अमूर्त के स्पर्श को व्यक्त करते हुए वे कहते हैं -

अंजनि माँहि निरंजन भेट्या, तिल मुख भेट्या तेलं।
मूरति माँहि अमूरति परस्या, भया निरंतरि खेलं॥

गोरखनाथ ने जो पंथ चलाया था वह गोरखनाथ के नाम से भी जाना जाता है। गोरखनाथ का काल साँप्रदायिक दृष्टि से बहुत अव्यवस्थित था। बौद्ध मत, ब्राह्मण मत के साथ इस्लाम का आवागमन भी लगभग इस समय तक हो चुका था। ऐसे समय में गोरखनाथ का योगमार्ग एक शक्तिशाली लोक और धार्मिक आंदोलन के रूप में भी उभरा। गोरखनाथ ने हठयोग साधना पर बल दिया जिसके अंतर्गत गुरु महीमा, योगपरक साधना, ब्रह्मानंद की स्थापना, नारी के प्रति सचेत दृष्टिकोण, शून्य की

कल्पना, नारी साधना आदि इनके काव्य की प्रतिपाद्य विषय है।

सिद्ध साहित्य के समान नाथ साहित्य में गुरु की महीमा का प्रतिपादन किया गया है। गोरखनाथ के अनुसार एकमात्र ही गुरु हो सकता है। अद्धूत वह होता है जिसके हर वाक्य में वेद का निवास तथा हर कदम में तीर्थ तथा उसकी दृष्टि में मोक्ष रहता है। जिसके एक हाथ में त्याग और दूसरे हाथ में भोग रहता है। गोरखनाथ के अनुसार गुरु ही समस्त श्रेयों का मूल है। गोरखनाथ कहते हैं —

"गगन मंडल में ऊँधा कुवा, तहाँ अमृत का वासा।
सगुरा हो इसो भरि-भरि पीवैं, निगुरा जाई पियासा।।"